आज की आंख का सिलसिला

कविता प्रकाशन, बीकानेर



हरीश भादानी

आज की आंख का सिलसिला

प्रकाशक कविता प्रकाशन, तेलीवाडा, बीकानेर ३३४००१ / मूल्य तीस रुपये/ संस्करण प्रथम १९८५/मुद्रक गणेश कम्पोजिंग एजेंसी द्वारा रूपाभ प्रिंटर्स, दिल्ली ३२ में मुद्रित

AAJ KI AANKH KA SILSILA (*Poems*) *by* Harish Bhadani Rs 30 00

विराट आज को
उसी के अंगों को
आज का
यह निमित्त

क्रम

मैं तुम हम

सवाल हो जाता हूं

सवाल हो जाता हू
पहनकर भोर की सुबह
रच दना है
सीढ़िया हाकर सारा घर सुन
बहती हुई सड़क पर सुहान
भला लगता है
हो जाना कनार
ला सुन पान
ठहराव भी होना पड़ना है मुझे

सुनते रहना पड़ता है
कमरों घड़-घड़ का
मशीनों का कुनबाने के साथ ही
आस पास की
और और सूनी आवाजों का भी
धारे का सिलसिला
छुप चुप रहने का धीरज
धर र हो
गरज आते हैं बाँसिया म
स्नान लगाने वाले
हाथ आए हैं
स्वार्थिया कतारों म दरार
और टूट जाता है
जुड़ी जुड़ी नाते

फिर चोट हो
अनगार न न

सूरज के फिसल जाने से
छपक जाई सियाही दयता मैं
पहुच जाता हू अपनी देहरी
रगडता हू खाली हथेलिया
दुखती एडिया
पुकारता हू सीढियो को
आगन म पहुचा देने
मुख स ही
टूट कर बन
बौने सवाला द्वारा
घेर लिए जाने से पहले ही
ओढ लेता हू साझ
सोचता रहता हू
कुछ भी नही हूँ मैं
महज एक सवाल क सिवा •

मुझ से बहुत पहले का

मुझसे बहुत पहले का
यह कुछ
उम्र की बसाखियो के
टूट जाने से दहा है
और कुछ
समो न पाया
मुझ बनते हुए को वह
मुझसे अस्वीकारा अलगाया गया है
बहुत कुछ और भी
जो रास्ता रोके हुए था
मुझ से ही तोडा गया है

इन ढेरियों के पार
अपने पाँव रख दूँ
टूटे हुए मन से निकल कर
उठ गया है प्रश्न
तोड़ने का अप'मुख म मागना है

मैं, अब तक जिये
बदसूरत अहम,
एक चेहरे में दबा चेहरा
किरकिरी इतिहास पर आँखें फिराता हूँ
खीज के हाथों झटक देता हूँ
सारा उसी के सामने
मगर मिटता नहीं
घिसता भी नहीं है
मेरे सामने का प्रश्न
और उठ कर फैलता है
देखता हूँ मैं
आकाश को हथौड़ा फेंकने से
खाली हुई मुट्ठियाँ
फिर अँगुलियाँ ताकता हूँ
किस दिशा
नई बुनियाद की रेखा बनाऊँ
कौन सी माटी दिखाऊँ
क्या-क्या
और कितना
किस तरह
रखा जाता है मुख में
आकाश में
टूटा हुआ
अकेला मैं
ताड़ना के बाद बहुत कुछ और
मर पाग होने के
न होने न दुखता हुआ
अकेला है •

उम्र के ऐंठ जाने तक

उम्र के ऐंठ जाने तक
सासना ही है मुझे
सडी हुइ हवाओ का आकाश
इसलिए खीचता हू
अपने भीतर तेजाब
धकेलता हू लहू
ठहरे नही   सिफ दौडा करे
मगर दुगधती हर सास म घुल
उतर आती हैं मुझम ठडी सलाखें
छील देती है वे
मेरी देह का पाताल
नोच देती ह मरा ब्रह्माण्ड
निकल जाती हैं मुझ में से
कुछ और ठडी हो

सोचता हू
जोड जोड से निचुडता मैं
बहुत ताजा रही होगी ये
मेरे होने से पहल
गधाती रही होगी य सासो को
घाती भी रही होगी
मुझसे पहल की दुनिया के धुआ स
सोचता हू
गई सदी क बुढापे में जन्मी पीढी ने
निर्वीय होकर भी
पौरुष दिखान खा लिया हो
मास लोहू
इन हवाओ का
और फेंके हो आकाश बहु कर
ये ककाल
सडन के लिए ही मरे सामन

निस्पृह निष्पाप बैठे हैं
मेरी दुनिया के
ये मांस भक्षी लोग,
मुझको
मुझमें बनी इस भीड़ को ही
फिर फिर घोटना है
बंदूक लिए जाने का मेरा ही विरोध
हर क्षण उतरता है ठंडा जहर मुझमें
कंठ तक नीला होता हुआ मैं सोचता हूँ
बन्धु और बंदूक लिए जाना
हो तो सकती है मेरी विवशता
किंतु भूख में
आग होना भी तो है
मेरे होने की पहली जरूरत •

पेट और पीठ की

पेट और पीठ की
दीवार पर ठीक बीच
मुझको भूख ने कहा है [illegible]
बाहर निकल आए मुझसे
[illegible] होकर
भीतर ही भीतर
[illegible] जाकर [illegible] में
[illegible] रही अब आत्मा मेरी
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मेरी चेतना तकाजे कर रही है
बाहर निकाल फेंकू
धरोहर मे पड़े भूख के भ्रूण का
यू उछालू
टकरा टकरा छितर जाए चारो ओर
मुझ से ही
उठवाई गई
ठडे बारूद की पहाडी पर,
मनु को अदम को
अपना बाप
और मुन को
गर इसानी अजूबा समयन वाले
य वोन   नपुसक
झुरझुराकर दखने को विवश हो जाए
उनके नीचे ही
चिटखने लग गया है
मेरी भूख का अलाव
गूगा मुह फटने लगा है
फटे आकाश जसे
झरूटने लगी है
पठार का कलेजा आवाजती अगुलिया
सभ्यता की
बदशक्ल गुम्बदें धसकने लग गई है •

मेरे अतलान्त में

मेरे अतलान्त में
तीन स्वप्न
गर्भीय ग्रहण के बाद जन्म
मेरे विवेक, सुन
मुझमें मर गए हैं
क्षण क्षण घूमते रहे
एक से तीनों दशक
इनके अन्दर में सम्भव होता हुआ
भस्मों के भाठे होता हुआ भी
तुझ को पचकियाँ देता रहा हूँ
पाला किया हूँ माँ के दूध से
इस्पात अंगारों से
गिरते आए मेरे विराट पौरुष ! सुन
आज की सुबह
तेरे गमान होने की
पहली सुबह है
आ रंगू पताकियों में ठीक सीने
दो आग्नेयास्त्र सूप
आषाढ़ के प्यासे अतीत के पानी पर
जीवित रखी जानी थ दुनियाएँ
अनजानी न रहे मुझसे

इसलिए हार हों
निकला है न कोई साहस
इतर दो रास्ता अंधेरे को होता हुआ
भीतर बाहर के
सांसों में रमता छिना है तू

तू मुझमें निकला है
मैं तेरा मानव हूँ प्रेम में

जाए जहा तक आख
सुलगने लग गए हैं
उम्र के अलाव
उस आच से
तपता हुआ मैं
आ तुझे भी आच दू
आ आच दू
तुझको भीतर की तहो तक
साक्षी जो होना है तुझे
उजलाई उमर का •

सूरज के साथ

सूरज के साथ
तनाव सम्हाले
बोल रहा होता हू यात्रा की दूरियो से कि
दीवार की ओट लेकर ही
अलगाता है मुझसे सूय
अकेलेपन क समयाश में ही
जान जाता हू नसो का दुखना
आकाश के सुराखो से
रिसते सन्नाटे में लगा लेती है समाधि
कुछ और कुछ और
तलाशने की मेरी तीव्रता
अधेरे के
गिजेगिजे हाथो बार बार सहलाए जाने से भी
होने लगती है जुगुप्सा

सोचता हू
क्या हो गया है जरूरी

मेरे और सूरज के बीच दीवार का होना
उतार फेंकना
सोच का यह भारा
दे रहा हूं आवाज अपनी नींद को
कोई नहीं आता
न नींद न ही आहट
और जान जाता हूं मैं—
भला नहीं लगता
आवेश और जुगुप्सा की चटाई पर
नींद का भी मेरे साथ सोना
पल-पल पर बिखरती ऊर्जा समेट
सोचना पड़ता है मुझे
तलाश लूं एक और सूरज
जिसके साथ
सम्हाल अपने ताप
हो सकूं मैं एक अनहोनी यात्रा •

प्रत्येक रात को

प्रत्येक रात को
अस्वीकारों के साथ
महसूस करता हूं अपने पर
गीली मान्यताओं के अंधेरे का घेराव
हाथ-पाँव फेंक दिया हो
अस्वीकार का साँप
सामने के रास्ते में पड़ा हो
[illegible]

[illegible]
[illegible]

कुरेदती ही नहीं मुझ

पण्डुलम स बधी

सुइया द्वारा बताई जाती

समय की जाट बाकी स चिढ है मुझ

फिर भी आगे ग़लता पाता हू युग को

उजाल की हथली पर

पढता रहता हू

दसिया कोण बनाती

सुइया क उतार चढाव पढन स ऊब

सडका पर भाग भाग कर

सर की ऊचाइया पर ढर-ढर

पर गलिया चाला म

रिस रिमाकर

धूप फेंकन वाल पिण्ड को भी

अस्वीकार दता हू

सीन लग जाता हू

फटी फटी आवाजें

सायरना सीटिया का गला दबा देने

दौडता हू अलगाव की दौड

तनाव क दरवाजे से

थकान की दहरी तक

सुइया क कोण

नियान लाइट और कहकह होकर

अकुलान लगत है

ओढ लिए जान

फेंकने लगता हू

गिन गिनकर घटटी सास इनकी ओर

फिर झाडता हू

देह पर आ जमी थकान

सहलान लगता हू दुखती रगें

दख ही लता हू

हाफ हाफ कर टूटने को हाती

सास साधता मैं कि

यह रात   यह दिन
अलगाव की यह दौड़
ये सड़कें   ये चेहरे
यही है सब कुछ
अस्वीकारता रहा हूँ जिसे मैं
नहीं टूट पाया हूँ किसी से भी मैं

इतने इतने अस्वीकारों के साथ
बहुत कुछ स्वीकारने की
अपनी विवशता पर सोचता हुआ मैं
            फिर महसूसने लगता हूँ
अपने पर
तीखी गंध वाले अंधेरे का घेराव ●

आ मेरे सामने आ

आ मेरे सामने आ
करीब और करीब आकर देख
मेरी आँखों में
कुनमुनाते सवाल—
क्या डूब जाता है कोई
            आवाज़ों की भीड़ में
कोमल ही दहशत लिए हो
क्या ज़मींदोज़ कोई दर्द
पनप ही क्या है
अलग शरीर धारकर कोई दो
एक और करीब
[illegible] हूँ मैं
यह मैं   रखता हूँ अब भी इन्तज़ार
[illegible] के लिए

लिजलिजी दया
क्या उतर आती है उसके चेहरे पर
क्या ठूस दिए जाते है चुप्पिया के निवाले
अपना कहने को
हिलक्ती मेरी जुबान म
और क्या मागे जात हैं मुझस
लहू के तक़ाज़े

तू जिज्ञासा नही है क्या
न सही सवाल है क्या
पूछा गया मुझस
ल रख दख अपनी हथेली पर
मुझस टूटकर बिखरते य सवाल भी
हाथ होता हू
जिन कतारा क
छाह हा जाता हू जिन पावो की
उन्ही स टूटकर
क्या होते रहते हैं अलग अहम
क्या तोलन लगते हैं मरी विरासत
क्या उछाल देते है
चौराहा पर मर सपने मेरी एपणा
फिर क्या अथ रह जाता है कतारा का
कस पढ लिया जाता है
दूरियो स,जुडे रहन का धम
और क्या क्या
खाकर जिया करता है वह अलग अहम

रख उघाड कर आखें
भर लिया करता हू जिनस
अपना भीतर बाहर
नासूर हा जात हैं व माह
दुखती तलाश का शरीर लिए देखता हू रास्ते
जैसा म
चहरे,भरे,निकले है लोग

चटा लेत हैं
हर जरूरत पर एक चेहरा

काच की नलिया म बनता है
लहू मास हाड
गणित निचोडन से टपकत हैं
विचार मस्कार
साचे ही होत हैं सबध

आ आ मर आखिरी पडाव के स
कैस वह
काठ मी पुतलिया को आदमी
आ मैं-तू मिलकर रखें
समय की छाती पर सवाल, पूछें—
आदमी आदमी से जुडे
काफिला हो यात्रा जिये
तब क्या जरूरी है
लहू क तकाजे
कोई विरासत
अलगाया हुआ अहम •

एक वह

एक वह
पिरेमिड उठवात रहने की हवस
और दूजी—खाइयो से
खुले धरातल पर आन की कशमकश
इन्ही दो
आदमजात आदतो का
मायना है जिन्दगी

दोस्त मेर जीन के लिए
इन दोनो की जद्दोजहद का ही नतीजा ०
मनु इडा स
मरा तुम्हारा आज तक पहुचना

मैं और तुम साक्षी थ आज भी हैं
सही को गलत
गलत को सही बताकर
इतिहास हो जाती इस ज़ुबान के
चिपकाते रहे है
इसी की चिदिया के दमाग आखें
बार नार ज म लते
एक दूजे क शरीर पर मैं तुम
ब हैसियत
भोक्ता साक्षी
आज फिर तकाज़ो की बुनियाद पर
पिरमिडा स खाइया को पाटने
एक ऊचाई घर बनाने के खयाल रचन
जो उठ आवाज़
उस गलत कहने से पहले
उतारन होग मुझ तुझे भी
चहरे पर चढा चहरा
इन मोटी तहा क पीछे
असलियत है तेरी और मरी
छोडकर परहेज उठाना ही पडेगा
असल चेहरे स
सामना कर लेन का खतरा
बाधने हागे तुझे मुझ अपने उनके भी
हाथ पाव मुह भी
जो असल के सामने पडते ही
लूटन लगते है
ब्रह्मानद सहोदर का सुख
और आखो म मरी रखते हैं ऐय्याशी

तुमको मुझको ही देनी है सज़ा
उन लोगों को
जो अपनी आँखें मीच
पुरन्दरी अंगुलियाँ आजकर
खुलवाते हैं
भय से चढ़ पड़ी आँखों को
पहचान लेना है उन्हें
जो पत्थर परचाते हैं जठराग्नि से
अपना केवल अपना
होना बनाए रखने
करवाते रहते हैं यात्राएँ यात्राएँ
और चरते रहना पड़ता है
तुझको और मुझको
चरैवेति चरैवेति
जिनके बहाने पोषते हैं
प्रेत-विस्तर की गरिमाएँ
बता क्या सम्बोधन दें उन्हें

अपाहिज है बदबू फेंकते हैं ये
सारे के सारे अक्षर।
थू थू उगल तू मैं ही थके हैं
यूँ नहीं होने देना है
मुझे तुमको और तुम्हें मुझे
तब आ कर लें
अपने ही भीतर जीवित
मैं से हम व हम होने का हौसला
खरोच लेंगे
सवाद के सीधे नाखून
असल पर पड़ी झिल्लियाँ
रख देंगे असल के सामने तुझे और मुझे
दिखाएगा फर्क
इकाई से दहाई का
अतीत और वर्तमान का
जीवेषणा गवेषणा का

तब न तुम न ही मैं
कर पाएंगे हरफगीरी
बहुत सम्भव है
भीतर तक लकीर जाए तुझ और मुझे
सूरज हाथा ही
रेत दर रेत आवत पावा पर
ठहराव का पहाड़ रख दिए जाने से
दुखत हुए लोग

झुलस जाने के भय स
मैं और तुम
न सम्हाल पाए अपनी हथलिया हर
बदलाव की एक और जमीन
बिना आहट
दरक कर अलगा जाए
पहलुआ का हरावल
पोछ कर फिर भी खीज के झाग
रगन लग जाए
आखो म फिर कोई खोज

ठहराव क सबब पर
सवाल ही सवाल न उठा दे
लप न दें
फट गए मास पर फिर कोई गुबार
आ बाधन लगें मैं और तुम

जिरह बखतर को नही
हाड माम की दह ही होती है हराव
एक और कतार
जड़ी होती है इसस
शरीर और प्राण पीने वालो की
नेज खुभा खुभा कर
नकरवा दती है समझ क रिश्ते
उलटवा दती है

कदम-ब कदम
हाथ-ब हाथ किए गए सब कुछ का
और ले लेती है
जिन्दगी की लडाई को
अपने ही लहू की हदा म रखने का
हलफिया बयान
निर्णायक दौर का
धीरज नही होता इस कतार म
और लडाई टूट जाने का
कारण बन जाती है
बित्ता भर समझ
और एक ही बालिश्त पट वाली यह कतार

मगर इनकी मार से
मरती नही फिर भी एषणा
ऐसी ही सना
होना है तुझे और मुझे
आज स ही घडनी है कल की सुबह
आ हम हो लें पहले
मैं और तुम
हो लें एक शुरूआत
जब भी लगू मैं तुम्ह
बदशक्ल ठहराव
तोड द कही से भी मेरा मुहाना
और मुझे भी
महज घुआती हुई
इधन लगो जब तुम
सास सास कर
अगिया दू मैं तुम्ह
तू खोजे और मैं कीलू
कीलता जाऊ
वे अक्षर
ऐसी विरासत सौंपने वाला पर •

मैंने ही की है

मन ही की है
वृद्ध सूरज स
वसाखिया छीन लेने की कोशिशे
मैं ही उचकाता रहा हू अगुलिया
आखा म घोप दने कि—
धरती पर आ गिरें इसक काच
या फिर जल जाए मरी अगुलिया

जरूरी नही है
वास्ता दू इसे किसी बुत का
चीखें उबाक थक गए
मरे मुन्नू के हाथा
मसोस कर फेंकी गई
पहली पोथी से अधिक
वक्त भी तो नही है मरे लिए
वंशर कोयले स लिखी ऋचाओ का
और न ही हुआ है
इतिहास बनाने का मुझे इश्क
मैंने मेरे समय ने
धीरज की पतीस हदें
लाघने क बाद लिखा है
नपुसक सूरज के खिलाफ यह दस्तावज
गुलाम है यह
कूड क पहाड पर चार पांव टिका कर ही
बोलते रहन की आदत का
कभी नही दखा इसन
अपन ही नीच स उठती
बन्दू से घुटत हुए मुख
मकाडा से
गुतरा जाता मरा शरीर

गलियारे काढता रहा है यह
मुचते जाए ख्याल
और होत रहें अलग नश्ल की पलाटून
वधा दे दे कर
उठाया जाता रहे जिसे ऊचा और ऊचा
है कोई वजह
पोरा जाता रहे
जीने की ललक मे ठडा जहर
और नकारी जाती रहे
तकाजा की इतनी बडी हकीकत
किस कानून के तहत
सजाए जाते रह
कीलें ठोक-ठोक कर मैं मेरा समय
घेरे जाते रहें काटो के बाडे म
ठूसा जाता रहे
नारा का गूदा मेरे गले मे

कानून बाहर नही होगा यह पूछना—
किस भूख के लिए
बनाई जा रही यह आदमजात चर्बी
क्या-क्या पकना है
जो खर्ची जा रही है कीमती इधन
कौन सी अजूबा दुनिया
निकल आनी है इससे

इसीलिए होता हू मैं
ऐसी ही होती है क्या पेशवाई
यही है क्या
आज की इस सभ्यता का सत्य

मुझसे हा हा मुझसे ही
लिखे गए
सवाली दस्तावेज का
अगर यह मायना किया हो

सूराखे ही जाए मेरे कलेजे
धुआई जाती रहं
मेरी आखें
आवाज भी
आख वालो !
मापा टीका लिए बोलने वालो !
बूढे नपुसक सूरज के ओ पेशवाओ !
ब कलम खुद लिखा
यह दस्तावेज पढ लो
सुराखने वाला
हर औजार
मेरे ही हाथो से
बनकर
पहुचता है तुम्हार हाथ ●

हा सूरज के बेटे

हा, सूरज के बेट
इस जनस्थान म
अभी-अभी घट गई
अघटना का साक्षी मैं—
बाप का धम—जटायु
लहू की झील हुई इन आखा ने देखा है
मीनारो महराबो वाले रथ म
बाध ले गया
सोने के कानूना का
दस चेहरो वाला राजा रावण
धरती की जाई सीता को

वही दशानन

जिसका हर चेहरा
साम दाम दण्ड भेद के चार पगो पर
नाचा करता
वह गण की दुनिया का वाहक नही
अहम की
ऐंठी हुई एक कठपुतली
भाषा से कगाल कापुरुष
क्या करता तुमसे सीधा सवाद
शतरजो पर रचता राजनीति
प्यादो से वजीर
गधे स हाथी को पिटवाता
वही ले गया माड कर माया
जनक के जन गण की सासा मे
पापित हुइ जानकी
तुमस वरित तेरा वामाग
सुख-दुख के
आवेगो की पहचान जानकी
सत्ता क पिजर म
कसमसी कुम्भजा के सासो का
बुदबुदाता झाग और दुखते आवादन
देख सूरज क बेटे
धुआते हुए पडे हैं
चूल्हे चढ तव पर
आरण्यक बस्ती की गली सडक पर
हो गइ हवाए राख
शीशो मे पड गई दरारें आसमान म

तुमने मैंने भी नही सुना देखा
बादल पहन
कभी अगार बरसाए इ दर ने
वह ता थी तेरी पहचान
विघन कर बस्ती
झकझार फकोन गई वह मुझको

गण के राज
समाज का धनुष धारने वाले
घट गइ अघटता स
दुश्चिनित मत हो
पीठ वधे तरकश म भरे इरादे
हाथा म लेने का समय
ले मुझसे सूरज के बटे
मेरा तो होना ही इसम था
उठे बाप का धम—
जगल को जनस्थान
बनाए जान की हसरत म
मोच मोच दी गई
देह से पाखो से लड जाए
उडे जा रहे पाखडो के पवत से

दो पजे दो पाखें
इस बस्ती के बासिंद के
ये ही हाथ और हथियार
इन्ही स लडा
दरका दिया दप का चेहरा
पर सान की लका मे सान चढी
तलवार लिए था राजा
तोड गया पाखा पावा को

ऊपरवाला आकाश
बिना दात जीभ का
फिर क्या आखें फाड रहे हा
किसे आवाज रहे हो ?

जगे अक्षर के पुजीभूत पौरुष हो
ला अपन समीप को देखो—
रच लिए गए कपट का पहला विरोध हू मैं—
बरफ्ती हुई देह का
कतरा कतरा लहू

जमी की रग रग मे पोरता
सुखमुखी मैं—जटायु
चुप होन स पहले
तुम स बोल रहा हू
सिफ दह टूटी है
तिरशूली मत्ता से
लडत रहने का
मेरा धम नही टूटा है
भय का मामा मारीच मरा है
तपती हुई वृख से लेकर उम्र
पला जो पौरुष मेरा नही मरा है
ये मेरी हिचकिया नही हैं
मेरी सासा की इति भी यहा नही है

यह तो वह भाषा है जिसको
आनेवाले क्षण मे ही बोला जाना है
यही है तेरे पुल की अहम जरूरत
घडेंगी कारीगर नल-नील

दिशा ! तरी दिशा ! ले देख
लहू की झील हुई मेरी आखो म
दक्षिण दिशा
उडा जा रहा है सत्ता का उडन खटोला
और और छलना का तत्र
बैठा है तरवार फटकता

वाणी क लिए
अकुलाए हुए आज के ओज !
उतर मेरे अतर मे
इन बस्तो के तोडे गए
एक एक अक्षर को जोड
यही हरावल ले जाएगा
तेरी ही वाणी तक तुझको
बह गए लहू से लेकर सीख

जो अक्षर के आज
आज के अहम तकाज़े जो •

मन भारी कर लिया अगर

मन भारी कर लिया अगर
सारा आकाश
सिकुड कर
दो अजुरी रह जाएगा
दो अजुरी आकाश
बहुत खारा होता है
प्यासी धरती पी जाएगी
पोर पोर कडवा जाएगी

मौसम तो सारे आवारा
जितनी बीती
सी लिया जतन से धीरज
फिर भी उघडी मन की लाज
हवा की नजर लगेगी
सारा जग जानेगा—घूर घूर देखेगा
उघडी-उघडी मन बीती
फिर क्या ढापेगी

सुन री बडी उमरवाली ओ सास सगिनी
जैसा है रहने दे आकाश
मत आहट कर
गुजर जाने दे मौसम
मत देख हवा के तेवर
धुन के पहरेदार बिठा दे
रख निगरानी
आधा की देहरी के बाहर •

गलियो-घाटियो

गलिया घाटियो
भटके दुखा का एक लम्बा काफिला
लेकर चले है
सामने वाली दिशा की ओर

ठहरने का नही है मन कही भी
धीरज भी नही है
मुडकर देख लें
कोई गुबार
करना ही नही है
डूबती आहट का पीछा

चौराहा थामे खडे ओ अकेले
देख तो सही
आखें जा टिकी
नीलाभ पर्तों पर
हवा म घुन गई है सास
सूपे छोर सारे
हाथ लम्बे हो
पाछन लग गये हैं कुहासा
झरोखा के बाहर
दूर-दूर पसर नगर तक ●

मुझे प्राण देती

मुझे प्राण देती
हवा की सतह पर
आ ठरा है

धुए का असीम
गहरता रुंजिया घेरता
आहटें टाहता
ढापना चाहता है मुझे

सास म घुल
स्वर वाधन म लगा है

सफर क निए
रास्त खाजती ओ दप्टि
तवाजे पहन
आधिया स उलझ
वावियो की
गिरफ्त स छीन कर
क्षितिज के कगूर पर
सूय रख द
देखू दिखाऊ
हसती हुई
धूप का एक और निस्सीम •

भीड के समुन्दर मे

भीड के समुदर म
बचाव के उपकरण पहन
न रहू
गोताखोर सी एकल इकाई
उतरता चला जाऊ
अतला त म समान
टकरा जाऊ तो लगे
भीतर दप की चट्टान दरकी है

इतने बड़े आकार में
इतनी ही हो पहचान मेरी •

मास की हथेलियों से

माम की हथेलियां स पीटे ही क्या
जडाऊ कीला के किवाड़
          खुभे ही
रिस आया लहू झुरझुराया मैं
कितना दुखाती है जगती हुई यह नीद
          पाछा है खीज कर
फटी कमीज से इतिहास
अक्षरा की छैनियां से तोड़ने लगा हू
मेरे और मेरी तलाश के बीच
पसरा हुआ जो एक ठडा शून्य •

बहुत गलत जीते रहे

बहुत गलत जीते रहे
बिना हड्डी की जीभो से
          बारहा चुरके जान पर भी
हाठ भीचते रहे   आखें भरते रहे
पकड कर
झटक न सके जीभा को
झाड न सके उन पर उगे काटे
    बताते उन्ह

कटी जीभ की पीड़
सुनने देते उन्हे
अपनी ही घर घर आवाज़

बहुत गलत रहे
टहल-टहल कर
चबाते रहन वाल दाता द्वारा
गस्सा गस्सा मास
ताड़े जान पर भी
चिड़िया ही चिपकात रहे
अपन घावा पर
उड़ात रहे मक्खिया
उलट कर ठूस न सके
उन्ही क मुह म
उनके अपने ही हाथ
न रख सके एक टुकड़ा पत्थर
उनके खूबसूरत दाता तले
एक बार ही   दबते तो सही
अपना ही कच्चा मास खाते उन्हे
कितना गलत किया
न रख सके घर के बाहर
तकाज़े पहन आती
एक भी सुबह को
सुबकिया भरती गर्भिणी रात को
न घाट सके
चीखत आखर का गला

काश हम भी पहन लिया करते
धूप छान छानकर
जिन्दगी क दिन
सा जाया करत
बिछाकर मनमनी सुविधाए
ता शायद
अहसास होना हम भी

अपन सही होने का
उफ कितना सही है यह—
अब तक की यात्रा मे
न जान सके
एक बार भी सही होना

मानना पडा है आज
अपन एक एक क्षण
एक-एक शब्द का गलत होना
नहीं जानते रचना-चालना
स्वय को सिद्ध सही बनान वाली भाषा
फिर हमारा किया अथ
हो भी कसे कोई अथ •

ओ गर्भिणी चेतना

ओ गर्भिणी चेतना
आज हमको समय की सडक पर
उम्र के आकडा का पत्थर दिखा है
रोशनी से घुली हवा
खोजती मास को
साथ का अहसास छूटा लगा है
ओ जीवपणा
अभी सामन था
बडा सा रचाव
सिफ आकाश रह गया है
समय सा बुना था जिसे
तस्वीर जैसा धुधला गया है

आज हमको लगा

घाटिया की तलहटी की दुनियाओ पर
उठाय गए अगारा क सपन
बिना रीढ के कागजा पर
धब्ब बन उड रहे है
आख के सामन
एक भी चहरा नही है
अधरी अगुलिया
स्वरा का मसोस जा रही है
डूबती हुई चीखें
दह क अस्तित्व से टकरा रही ह
कुचको तर भ्रूण को ढोती हुई
हड्डिया चिटखिटाने लगी हैं
कुछ दूर पर
आकडा की नुकीनी सलाखें उठी है
तहा तक खुभा चाहती है
एक साथ दो दुख झेलती
जो गर्भिणी चेतना ।
झिल्लिया म
कभी स बन हम रूप को जन्म दे दे
अधरा म रोशनी फेंकने के लिए
जमीन नई तोडने के लिए
इस देह क टूटने स पहले
जीवेषणा की नई देह को
जन्म दे दे ओ गर्भिणी चेतना •

यह क्या हो रहा है

यह क्या हो रहा है
जिस तलहटी म
हम आग रखन चले थे

उस तक पहुचने
अभी शेष है दूरिया
और इधन चुकी जा रही है
यह क्या हो रहा है
ईंधन जो उगाती रही
पास-पास
आग होती रही सास के साथ
सुधियो को अदाज
आगे क्षितिज तक
बिछी बिछी दसे गई है
इधन की पूरी फसल
वही सामन
आज कुहरा पसरा रहा है
यह क्या हो रहा है

हा यह इधन
लहक कर आवेश होती रही
चिनगिया सी चिटख
रोशनाए गई
अधेरा की सडक
बालती जोडे गई धडकन
पाव दर पाव छपते रहे

हा यह इधन
आच हो-हो
बनाती रही है लहू
हरकता म बदलती रही है यह
जीने का मकसद

हरकतो के इरादे
हुए ही नहीं है उफनती नदी
कटा ही नही है
दूरियो का पठार
फिर भी यह ईंधन

चुकी जा रही है
यह क्या हा रहा है •

मन कहा रह गया है अब

मन कहा रह गया है अब
गध भीगा मन
धूप म तपा
आधिया के भ्रूण म
घिस घिसाकर रह गया है
पिण्ड भर
सूख हुए बारूद का

सपने सपने कहा रह गए है अब
पीले मरे पत्ते
टूटी टहनिया
इधन समय
ढूहा बनाया है

सास सास कहा रही है अब
जी रह तमाशा पर
डुग्गी पीटत
मदारिया ने
गूथ दी हो एक रस्सी
भीतर के भाठे स
रगड खा खा
सुलगी है किनार स •

सुन हमारे मन

सुन हमारे मन
मुट्ठी मे सपना है अनागत के लिए
नही उनके लिए
गए कल से लगी
मुर्दा खराचें सेकत हैं
उन आखा के लिए भी नही
जड लेती किवाडें दूरिया का देख
उन पावा के लिए नही
थमक धसते हैं रेत मे
जगल न काटे
ढाए नही धरती पर उगी कूबड
आदता की मार खाए
सहम सशया से
हकलाते नारे लगाए

सुन हमारे मन
अधेरी बुर्जिया के पार
देख लेने का -यौता मिला है
दशक म वतरो के बाद
आ आहटा की
सीध लेकर चल
साक्षी जो बनना है तुझे

जिस मुहाने पर
अनागत ज म लेगा
वही वही मुट्ठी खुलेगी •

आगन मे

आगन म
अकेले टीसते है
समुदर म जैसे हवाए
चारा ओर स घर खडा है चुप
टकराकर विफरते वरस जाते हैं
आजी नही है
आखा मे अभी तक साथ
रात के लिए रचे नही सपने
साध ही तो है
धूप म नहाती
हुमकती आए कतारें साथ हो ल •

समय के सूप से

समय क सूप से
जमी भी उठेगी आधी ओढ लेंग
बाच लेग
अभागा स बुना जाता
अभावा का पूरा व्याकरण

पसरेगा जब भी सामन
ठडा धुआ
आया की कतरनी
पान डालगी
किसी भी बीच स

शौकीन दुनिया की नजर में
बदचलन
पर धूप से ही
रास्ता लेंगे हमारे पाँव •

पानी की सतह पर

पानी की सतह पर
बिम्ब कोई उतर आए इस तरह
एक तारा टूट जाए
कौंध जाए अग्निरेखा
केंचुल ओढ़ फिरते पिण्ड को
दाना ध्रुवा तक बींध जाए

झुलस जाए
काली रात के हर एक क्षण को
चोट जाए
सूखी खाल जैसा मौन का नगारा
क्षितिज फट जाए, सहम गूँजे
बुदबुदा सी फूट जाए नींद

उतरा हुआ वह बिम्ब
पोरों से रचे उषा
उतरे सूरज के मुहाने से
झलक लाती किरण साधे
सारी दूरियों के पार
एक तन मन जिये वह बिम्ब •

सुबह की झील से

सुबह की झील से
जितना भी ले सके पानी
धो लिया
चेहरे से रात का गर्दो गुबार

रेत सानी
पड़ लिए सपने निहार
उम्र खा सुलगी अंगीठी ने पनाह
दे दिया
लहू सा रंग सबको
सोच के सारे किवाड़े तोड़
सड़क पर आ गई तलाश
भर ली धूप से परात

कानों में ढलने दिया है सायरन
हथेली से पोंछे गई है
आंख में धंसता धुआं
देखे गई है
टुकड़ा-टुकड़ा कोलाहल
गुजरता गया करीब से
सूरज भी जाने कब
पीठ पर आकर उतर गया
ठहरी नहीं एक भी पहचान
दूर के लिए कोई भी साथ
था ही कौन
परात से छिटक कर
भाग जाती ज़िद
थाम लेती हाथ
शहर तो भागा जा रहा था
कांच के आगोश में दुबकने

सन्नाटा समेटा
तालू में ठूस लम्वी जीभ
सी लिए सारे सवाल
कल सुबह
फिर झील होगी
धो लिया जाएगा फिर
रात का गर्दो गुबार
घड़ ही लेंगे और कुछ और
न सही हिनक्ते स्वर
पानी की गरज की मार खाई
उठती हाट का
दो चार अक्षर वेच
लौट आई रेत के टीले
कल सुबह फिर झील होगी •

और ईशा नहीं

और ईशा नहीं
आदमी बन जिए
सवालों की
फिर हम उठाए सलीबें
बहते लहू का धरम भूल कर
ठोकने दें शरीरों में कीलें
कल हुई मौत का
दुहरा दिए जाने से पहले
तेवर बदलते हुए आज को देख लें

बहुरूपिया की नकाबें उलटने
हकीकत को फुटपाथ पर
खाने की सजा है जहर हम पिए

सुकरात का
साक्षी बना देने से पहले
तेवर बदलते हुए आज को देख लें
साधु नहीं आदमी बन जिए

रची फिर न जाए अधूरी ऋचाए
बाचे न जाए गलत फलसफे
जिन्दगी का नया तर्जुमा
कर लिए जाने से पहले
इतिहास का
आज की आंख से
सिलसिला जोड दें •

वे वे सब

वे सब

वे सब
हवा ही तो भरते रहे मुझ में
कहा है कितनी बार मैंने
मैं नहीं हूं
आर पार जाने वाली कोई सुरंग

सुना ही नहीं उन्होंने मुझे
किन्तु मैं
सुनत-सुनत उनको उन सबको
गले से एड़िया तक हो गया इकसार
आदमजात फुग्गा
फूंक ही दें
बद पीपे में बची खुची हवा भी वे
आखिरश तो
फूटना ही है मुझे
थच्च जा गिरूं
वरक्षों से कलई की जा रही
उनकी देह पर

तब कौन से
कागजी टवाल से
पोछेंगे वे
उजलाया शरीर •

कुछ ऊपर को उठी

कुछ ऊपर को उठी
कुछ नीचे झूलती हड्डिया
मास के साचे
लहू धारा आर
नीचे ऊपर ले जाती नालिया
और इन सबके ऊपर
भीतर की तरफ खुलते
कुछ सुराख छाड
सी दी गई है खाल
गोरी काली और पीली

यह खाल चलती है
न चलने पर
हाकी जाती है
बोलती है बोलती रहने पर
गूगी बना दी जाती है
तब चीखती भी है
पर बरमा बाद
जैसी भी है
इस देह की सना है आदमी
एक ही तरह बहता है
एक रग लहू
पर अलग होती है
चेहरे की सलवटा की झाइया
छूटती रहती हैं
मोटी पतली सूखी भीगी पपडिया
चेहरे से अलग रहने
चेहरा करता रहता है छोटा बडा
अपन सुराखा को
हा इसी देह का चेहरा
हाया का बदल

तकुआ से फोड देता है
सामने आए चेहरे के वे काच
जिनमे देखता है
खुद का निपट नगा

टुकडा-टुकडो म देखता चेहरा
भागन लगता है
अपन आप से डरता हुआ
आखें कहे जान वाले
दो सुराखो की सीध मे
ठीक भीतर की ओर
गोल हडडी की छत के नीचे होता है
बारीक शिराओ झिल्लियो से
बना हुआ पिण्ड
देखना सूघना सोचना
होता है जिससे
इसी गूदे मे होता है
अलग ही सूघना
सोचना फिर देखना
इसके कहते ही
बदल देता है लहू
चेहरा आदमी से आदमी का

यह गूदा ही भगाता है
और चेहरा
भागम भाग इधन खोजता है
लहू वाली अगीठी गम रखने
जा टकरता है
अपन सरीख दूसरे चेहरे से
कर लिया करता है इधन अपनी ओर

हाथ   हाथ से नाखून
नाखून से हरकत होता हुआ
खुरचता काट देता है

हम शक्ल का ही

सडा भी लेता है
अपने ही भीतर त तुआ को
हाना बनाए रखने
बदबू फकता है

नकार देता है
किसी भी दूसरे के
होन का स दभ

बुभ न जाए
रोशनी कहीं
समट लता है स्वय को
अधियारी तहा म

फलना न पडे
दूर तक देखना न पड
पुकारे जाने पर
ठहरना न पडे कहीं बीच मे

विराट स टूटा
कब तक यह बौना रहेगा
कब तक रहेगा
अजनवी अपने आप स •

भराव की प्रतीति के बाद

भराव की प्रतीति के बाद
और गहरा जान वाला मरा शून्य

भरा जाना है जिनस
व सब जा चिपके है
मरी पकड से दूर
घूमत टलाऊ क्षितिजा स

वे सव लगता है
मुम से चीमे जान को ही
घेरे हुए हैं मुझे
पी जाते हैं मेरी एक-एक चीख
आज तक नही टकराई लौट कर
उनकी ओर फेंकी गई
एक भी आवाज मेरी

अपने घर की
एक एक दीवार को
दशको के आकडो से भरता हुआ
कहता आ रहा हू
अपनी भाववाचक सज्ञाओ से
रचें, मुझ जैसा ही
मगर आज के मुझ जसा नही
जिसकी अजन्मी देह पर ही
जड दी जाती है
मास की एक और पत
वाहर आते ही
फिर एक ठण्डी खाल म
सी दिया जाता मैं
मिट्टी की गध को
मुर्दा लोहे की दुनिया मे
वदल देने
वौना वना दिया जाता मैं
जिया करता हू
आधा पट अधेरा खाकर

वे सव
अभावो की अदेही सनाए
आदिम आकार ले लें
आवाजें ही लौटें
आवाजो के उत्तर म
उन सवस कहता आ रहा हू

मेरे करीब और करीब आए
मुझ पर मढ दी गई
खामोशिया नाचें
दिखाए मुझ मरा ही लहू कि
लहू सोखन के बीसा करतना
याद भी मुझ मे
बचा हुआ है लहू

यह भी तो दखें व
उतार फेंकी है मैंने भी मर्यादाए
द दी है जल समाधि
पुरुषोत्तम अहम को
नही रखा है घोसला भी पित्तर के लिए
कहते-कहते थक न जाऊ
यह मैं हू मैं आज का आदमी
मरी ही हैं ये आवाजें
शून्य भरे जाने खामोशिया नोचें जाने •

आवाजो के बदले

आवाजो के बदले
आवाजें भुगताने अजनबी बने रहने
और देह को देह से
रगडते रहने के अक ही दागते हैं
चमडी के कम्प्यूटर
जाड आता है अका का
आदमी से आदमी
आदमी से औरत का सबध

साचता हू

इतनी ही बन पाई है
पहले आदमी से मुच तक की
सभ्यता-संस्कृति
अनिवार्यता है
इन्हे टीपते रहने की—नहीं
विवशता है मेरे जीने की
पढता हू इनसे छपती परिभाषाए
मर्यादा का ठप्पा लगना ही
सही होना है किसी भी सबध का
बिना ठप्पे का भाई
भाई नही होता
बेटी बेटी नही होती
बाप भी नही होता बाप, मा भी नही
कोई कुछ नही होता किसी का

और सुविधा के तकाजे पर
बदल जाने वाला ठप्पा लगे बिना भी
गलत होता है हर सम्बन्ध
मसलन एक द्रौपदी का
पाच पतियो मे बाटना सही
कुन्ती से कर्ण का होना गलत
लक्ष्मण का
शूर्पनखा की नाक काटना सही
गोरी सीता का कैद
रावण का वहशीपन
सही, नगर वधुओ की पूजा
गलत जीने के लिए
शरीर बेचने की विवशता

गलत है
शोषण पूजी का खुलासा
और सही
चीजो से आदमी तक का
बाजार लगा लेने की हवस

चक स्लावा का
अपने पाव चलना गलत

रडस्क्वायर स
लगडा कर चलन क आदश सही
गलत है
र्बालना कारियाआ के जुडाव की परवी
जुड जान के लिए
विद्युतकाम-गुरिल्ला हाना

पठार नदिया खाकर
जनता क राज का नारा ता सही
पर काल पील चेहरा पर
तरता दन्द गलत
किरकिराती हवस पर
चमडी के खाल चढा
पुर्जे खोजन भर का ही धडकत है
आदमीनुमा कम्प्यूटर
पुर्जो स ही बुझाते है भूख प्यास
दा क्षण हाफ कर ही
मान लेत है सम्बधा की इति

भीतर वाहर का घाव
अकेले हान का दुख

वदनू है खयाला की
खलल है दिमाग का
प्रतिक्रियावादी है व
जा चीखत है दवावा के विराध म

मशीन मशीन स आकडे
आकडा स आन्मी वनान वाला के लिए
गलत है
जुडे रहन की हमारी एपणा कि
हम अक्षर बाटें
वालें एक भापा

देह से देह जाड कर रखें आदमी
उखाडते जाए
जात रग धम की
कडा पाबदिया की
भाडी तल्लिया
यह—तेरे मेरे दम्म का अथ है—
आदमी—दुनिया आदमी की •

यकायक ही

यकयक ही
कर दिए जात है समाप्त
ढलान के मुहान पर
पहुचन के ठीक बाद
अब तक लिए जाते रह इम्तहान
लटका दते है गले मे
इल्मी फज स पाबद मास्टर
असफलताओ का बडा इश्तिहार
और बहलन लग जाते है लाग
चलन के नाम पर होती
कत्थक राक एन राल की
मुद्राआ स
आ ही जाता है बच जाना
बीच मे चल लेने की
किसी भी विवशता से

खोजते रहते हैं बिचारे दवा
तरो ताजा रखने खुद का
प्राकृतिक चिकित्सा ही
रास आती है उन्ह

अपनी जमात का नुजूमी
बनाए रखता है इह
कीचड का कमल
बचाए रखते हैं भार व निना से
चलती जो रहती है सामने
पट्टा चौ फले दागाना से
लनी पनी कतारें
यू हल्का लते हैं
अधिपति अपना अपच

बत्तीसी भिचने पर ही
चाट लग जाती है इह
दुख भी जाते हैं कभी
रक्षक के अरक्षण से
न्वालिय की पूजी की तरह
खच कर देते है सासे
कुछ भी नही बचता
लहू मास के सिवा
खुद को ही बताते है
व्यास का बेटा शुकदेव

पढाया ही न जाए
जीने का अलिफ बे ते
तब हो ही कसे ये
परम न सही
अन्ना ही भट्ट भट्टारक

इसी कारण
बिखरते टूटते है ये
नाम हो जाता है सरकस
पड गया जो भी अकेला वह जोकर

पानी पानी हो जाती
जीने की बेचनी वह महज तमाशा

 आज की आख का सिलसिला

दिखता नहीं
अनुशासित हवा मे
फाइलो के घपटे मे बैठे
सभ्य लोगो को
हाका मचाते लोग
मेज पर पडे मक्खन
कबाब रोटी रुमाली सलाद को
समझें अपना आज वे
फ्रीज मे तरतीब से पडा है
उनका भविष्य
पीटें पीटते रह
अपन गले य
बढ लें तोडने का बद दरवाजे
बदूकची थामे खडा है सतरी

ऐसे ही क्षणो मे होता है मुझे
अपने होन का अहसास
ढलान के मुहाने ही पाता हू खुद को
चीखता हू
उलट कर फेंक देने
यात्रा को दी जाती नियति—
पोस्टर आश्वासनो के गहने

नहीं, नहीं होना है
मुझ जैसे किसी एक को भी
अपन सोच के रचाव से अलग
टूटत आकाश सी
आवाज म यह कहना है—
पहचान का
कवच कुण्डल नही दूगा
मानो भले ही कण दूजा
जीने के लिए
रचा गया
जुगराफिया मेरा नही है

हा नही सकती
तिजूरी की गणित मेरी
सपना न देख व
मलीवा से लदा
चढ जाऊगा फिर पहाड पर
क्षमा करना उन्हे कहता हुआ
ठुकवा लूगा कीलें

व सुनें समय भी लें
गूजती फिरी आवाज़
अब हा गई है हम
मैं' नही अब य हम ही देखेंगे
कौन है व—आदमी स
आत्मी का तोड
बनाते है अजूबा

ऐसे सभी
चक्रवर्ती पुतला को
गहरे बहुत गहरे गाड
नई बुनियाद पर

आदमी की
एक ही दुनिया बनान
बालने लगे है
अक्षरा के आदमी •

सम्भावना है

सम्भावना है

बहग के
मीला लम्बे कारखाने म
जमाथिया
बनन लगें फिर

 आज की आग का मिलसिला

बाजार की चिंता नहीं होगी
इस बार
क्योंकि व
जो खुद को मानते हैं
अदम को आदमी तक
पहुचने वाला पहला सिरा
और सोच की
हर जात का
पहला फोटू बनाते है

महानगर' से 'गवई ब्राड तक
सारी वैमाग्रिया का
थोक परमिट हथियाने
व ही होगे
मनीका ए-खास

हो यह भी जाय
पुर्जे बने
चुप्पिया ही हो रह व तल की
उकता जा गए हैं देखते
रामन-करासन के लिए
वहोश क्यू
घुटते जो रह हैं व
चूल्हे-कलेजे के
धटा टोपो से बिचारे

सम्भावना इसकी भी है
युद्ध स्तर पर चले
छोटा-बडा हर कारखाना
हडताल का सपना न आए
बीडी तो
हद है—सोच का ऐसा पुलाव
मूडी फाकने
मूतने तक की भी मनाही

ली जाय दी जाय न च जा
छीन कर दा हाथ
थमा दी जाय
वसाखिया की चाल पर ही
रुजगार की सुरक्षा है

कानून क तहत
पहल ही लिख दी गई है ऋचा
सौगधा खा
सर पर रखी
व्यवस्था की किताब म •

वे जो

व जा
दूरिया बिछा गए मेरे लिए
व जो
मुझ पर चुप्पिया बाध हुए है
उन सबको दिखाया चाहता हू—
शब्दा के जगल नापत पावा म
फट आया है चौथा दशक

देश विधान ससद और चुनाव
भाषणा-याजनाआ के
बावलिय काटा से अजूबा से खुभा
लीर लीर हा गया हू मैं

मेरे रचाव का वहम
लिए हुए ही न मर जाए बूढी सदी
पकड लू गिरीवा हाथ लम्बा कर

समय के नपुसक मसीहा से झटक लू
जेबो मे भरा
आदमी का ववाया
थूकू भ्रूण पर
जिसे कहते रहे हैं वे मेरा भविष्य
सवाला के खारे तूबे खिलाऊगा उन्ह
इक्कीसवा सदी का पहला दिन ही
जान ले यह
उसको मर साथ जीना है ●

घटाटोप

घटाटोप
बादल-दर-बादल
उतर-उतर आया है इदर
डुबो डुबो देने
सूख-सूख कर
पवत सी ऊभी धरती को

नही सुना है नही सुनेगा
मूसलधार अहम यह
जिसन मेट
माटी पर चलते पग

नही दिखेगा
परद पडी पुतलिया का
लाठिया,
अगुलिया पर
तन तन हुए गणो का
गोवरधन

फिर भोगे
अपने ही हाथों रची नियति—
छितर छितर कर वह
पूठ पसवाड़े
आछ नाला-नाली स •

यादें

यादें
गीता तो नही
पंडित बन वाचो हमेशा
भारी बनाने
पुण्य का खाता

सूली पर चढे
मसीह जसी भी नही यादें
देखते ही मन दुखाओ
आखें भरो
अस्तित्व ही कर दो समर्पित

एलोरा अजंता भी नही हैं य
निरखो पहचानना चाहो
अपना अतीत

य पोथियां भले हों
इनकी भाषा
तेरे आज की भाषा नही है

भ्रम है
छल भी है स्वयं से

यादो के सहारे
जिदगी जीना •

आबनूसी रात के कोठे मे

आवनूसी रात के कोठे म
फिर हलचल हुई है
बहुत सी
खूबसूरत यादें
जो माड पर कतरा गई थी
घुघरू रुन झुनाती
आगन मे उतरी है

साथ है व व ढीठ सपने
बजाने लग गए हैं
फूट टाल ताश
ऐसे शोर से
भागा किए हम दूर
पर फिर उतारू हो गए हैं
खा लेने
आख भर ही हमारी नीद

जानना चाहते नही है वे
उनके साथ जीना
उम्र भर भरमना है
और दिन के पाव चल कर
साझ के घर पहुच जाना
धूनी तापना है

यह धूनी
थलमलाती आच से

तन का ही नही
मन को भी तावा बनाती है

सुबह भर क लिए सोये इरादो
निलज्ज यादा
मसखरे सपना से कहो—
हमार पट के तालाब की
मछलिया का
आटे की गालिया की ही प्रतीक्षा है
हमारा सलवटा पडा चेहरा
हाठा के किनारा
काई सी पडी जो प्यास
दख, खा सक खाए

हमदम इरादो
भरम की पुतलिया से
सधी आवाज मे कहा तो
बीमार यादा
गूग सपनो से
बोला नही करत है हम
धरती की खुशबू से
रचे है हमने बालत सपने
ऐसे सपना का
कुनबा का कुनबा
पवत-समुदर नापने का
हौसला लेकर चलन लगा है •

आज

छोटा बहुत छोटा

छाटा बहुत छाटा
ल्खिने वाला आज
यक्वयक फलकर
आ गया है मामन
गू ी मा चला करता
फैंकन लगा है आवाजा के भाठे
अड गया है
उतारन लगा है
जिल्ग की मम्मिया पर स लेवडे
दाता से ताल्कर दखता है
दिए जा रह आखर
कर दिया है लीर-लीर
पहनाया गया तटस्थ चोला
उघाड लिया है
थार शरीर

दाए-बाए थार ही थोर
दहकती आखें
तिरछा हा गया है
कगूरा परस्त सूरज

घहघहाया समुदर
अपन भीतर समोता नगी धरती
उफनता हुआ
चल रहा है आज
मैं भी
इस आज स ही लिया चाहता हू

अथ—अपने होने का

वुनती रहती है
कपाल की छत के नीचे
सशय   भय
विवशताए ही विवशताए
सोच की
छोटी सी फिरकनी
इस आज से
ले लू हाथ
झटक कर तोड दू कच्चा सूत

वाहर निकाल
अपने भीतर की
कसमकस को
फेंक दू इस समुदर म
फैला लू अपनी बाह
अपना एक-एक क्षण
हम आगोश
हम आहग हो लू
इस आज का
इसी को वोलता
चलने लगू मैं इसके साथ ●

जब भी बैठता हू

जव भी वैठता हू
अपन समय से वतियान
दिखाने लगता हू
साथ रहने का हिसाव

उगल देता है वह
सवाल ही सवाल मेरे सामने
रखना चाहता हू
अपनी हथलिया म
पर छितर जाती है अगुलिया
फिसल जाता है मुझसे
अपने ही समय का
एक-एक सवाल
सोचता हू कसे उठाऊ
कहा विछाऊ
उठाते-उठाते थक जाता शरीर

लोग मिलत हैं
खिडकियो से झाकत
सडक छोड चलते हुए
कतरा जाते हैं मुझसे
आसपास के बहुत कुछ से भी
टकराने पर भी
वे नही, तवर वालता है
उलट जाती है मेरी जीभ
हाठा पर आया
अपना ही थूक चाटता
बोलने लगता हू खुद से

गूगी यात्रा मे आए
ठहराव और सवालो से
कुबडाता हुआ मैं
सोच ही नही पाता कि
लोग ही हागे मेरे जैसे
सवाल ही सवाल
उगानवाले
वर्फ-तपाकर दाग देना
धम ही हो उनका
न लगता हा उन्हें

ऐसा किए बिना
अपना होना—

क्या पहनना चाहता है
नाबालिग समय
हर सुबह नई कमीज
क्या नही हुई है उसे
इशारा पर चलने की आदत
क्या नही खाता है
परोस दिया जाता है जो भी
ठहरा ही रहे
रख दिया जाए जो सामने पहाड
चाहे ही क्या
बद किवाडा को पीटना-तोडना

यही विवश होते है शायद
सवाल धर्मी लोग

उमके चेहरे पर आए
तनाव-तेवर का
कविता या कहानी भर कह देने
क्या नही समझता वह
कहानी होती है परिया की
दादी नानी की
और कविता तो केवल सपना की
फूटर चहरा
फूल पत्ता की

पढ-सुन कर
माजली जाती है
बन्मजा हुइ जीभें
और याल जाती है तोतई भाषा
वही है मत वही है सही
कस बदला जा सकता है इसे
बहुत गहरे से जुडा है
यह भी तो

-बहुत कुछ का होना बनाए रखने
यह व्याख्या है उसकी
जो बोला गया है आकाश से
लिखा गया है
अजन्ताओ लाटो पीठो म
इन पर चढी धूल से
सर पोत लेन का अथ है
सान जैसी हमारी सभ्यता
पत्थर रग सस्कृति
लगा दी गइ है
जगह-जगह
छूने छाटन-जाडन की
सख्त मनाही की तख्तिया
अमानत है सम्हाल रखनी है
जाने किस सदी का उठ आए पित्तर
जरूरी हो हाना बनाए रखना
तराशे खुद का इस मुजब
हुआ रह परछाइ

कौन त त त तुम !
तो अकेला नही हू मैं
मेरे ही जैसे तुम
मेरे ही तरह पहुचे हो न यहा
किसिम किसिम के
सवाला का बाझ ही है न पोटली म
छिली है हथेलिया
खरोची हागी दीवार पीटे हागे किवाड
फटी बिवाइया छापी है न
लो सामने हो लेता हू
जुडवा लगते हैं न हम
एक ही कारीगर से टाचे गए चेहरे

क्या दखते हो मुझे
तरेडा गया है शरीर

जीवपणा नही
हथियार ही टूट हैं
आस्था नही
तो होलें हम साथ
एक यात्रा
एक और साथ के भावता
मगर मेरे हम रूप
वता यह क्या है
क्या है यह लाव स बुदबुदता
फफाल जा रहा है शरीर
सुन मेरे सहयात्री सुन
किसी का होना
वनाए रखन की यह विवशता
गलत हकीकत है
शाप दी गई है हम पर

खालड अतीत यह गुवार
यह ठहराव ये सवाल
झटक दें अपने पर स अव
और मान लें
तू मैं और वे भी
अपराधी है समय के
सवाल पर सवाल ही तो रखते रहे
पायत रहे
फुटपाथिया से बोलने के भरम
करत रहे गूगी यात्राए

अपने समय की
तस्वीर वनाने से पहल
ज़रूरी है हो जाना तलाश
तलाश मिट्टी की
रच सकें जिससे अक्षर
आत्मकद अक्षर
जिनके जुडने से वन

आदमी से आदमी का
आदमी के लिए निर्णायक सवाद •

सहज नहीं होता

सहज नही होता
मेरा मेरे चारा ओर का होना
होता है जो भी
आसपास या फिर भीतर-बाहर
अचानक का ही
होना होता है शायद

बहुत पहले का जड—जद
रख दिया गया है गोदरेजा म
झलक लेने सर झुकाने
और दुख-दुख कर
बनना है जिसका धम
बाध कर ठहराया गया है
होता रह
यू न होना बहुत कुछ का

सूरज के जन्म से
कुबडा जाने तक
तनाव चिपे चेहरा से
बारह घटा के युग के लिए
सम्बोधन सजाए जडी दहा से
वीतराग होना
बालिस्त भर आकाश ओढ
बुझी अगीठियो के सामने
अजनबी बने रहना भी

वेमानी हो गया है शायद
हो गई है मवाद
सडको की भीड
छीटे उछालने लगे है
घिसट घिसट कर पाव

सी दिया गया है
वक्त बवक्त चीखती चिमनिया का
रखा गया है केवल गुमसुम
धरती और आकाश के बीच

देह ही तो है
दुघटना है जिसके लिए
आज और कल का होना
सूखी खाल है
मैं और तुम
हिलत खडखडाते हैं
पर देह वह भी है
सब कुछ भाग
नकारती थकी जा रही है
फाइले खोजती है जीने के लिए

बदमजा हो गए सब कुछ पर
थोप दिए जाने
मिल ही नही पा रही
एक भी सज्ञा कोई सम्बोधन
कुछ भी तो नही बचा है
देह के अहसास भर के सिवा •

खुरदरी हथेलिया

खुरदरी हथेलिया
रगडा करता है
पेट की पिचकी पेंदी पर
सायरन से सायरन की
मशक्कत के बाद भी
मेरा दश
पुता होता है धुआ
उसके चेहरे पर
चिटखती नही एक भी हड्डी उसकी
जिया करता है
शरीर ढाता हुआ
दफ्तरा से दडबो तक
होती रहती है बलगम
उसकी ऊब और खीज
तनने से पहले ही
झटक कर झुला दिए जाते है हाथ
टीप दिया जाता है
ठगी अगुलिया से
आवाज होन से पहले ही
उसका आवेश
खास-खास कर
करवटें बदलता रहता है मेरा देश

गिनता है उम्र की सुबह शामे
चौपाया की पूजा के बाद
रोटी खोजने
भागता है मेरा देश
नही जानता वह
हर सातवें
या फिर महीन आखिरी दिन
दिया जाने वाला

टकमाली कागज
मेहनत की कीमत होता है या
मरत हुए जीने की
सूर तुलसी से मिली
विरासत के खरताल
बजाता रहता है मेरा देश
भजता रहता है
भूख का भुलावा देने वाला गाधी नान

कैसे जाने वह
खैराती अनाज की रोटिया
लहू नही बनाती
आखें ससार का
ज्ञान गुरु होने की पीनक म ऊघता
मेरा दश सोचे ही कसे
मेहनत बदल ली जाती है दौलत मे
और दौलत
आदमी के लिए नही
बाटी जाती है सिफ इजाफे के लिए

सुबह से शाम
भट्ठी पत्थर से बतियाकर बना
चार रोटी पूजी का मालिक
कसे बने

बनने ही कौन दे
मेहनत का हकदार
नही जानता मेरा गो भक्त देश कि
साजिशा के समझौते हो रह है
लोह की दुनियाए
बनान वाली जमात के खिलाफ
बाचने लगे हैं

समाजवाद की पोथिया
पूजी के पगम्बर

शरीर ही न हो जिनका अपना

कैसे उठाए विद्रोह के हाथ
कसे लगाए आवाज़ से आग
चलें कैसे बीच सडक
हा, कैसे चलें
वक्त के मसीहा ही
शब्दा का
जीने का नही बोलने का धम माने
ललकारें
नारा मे कठ तोड लेने और बाट
बचाव की लडाई के उपदेश

बीमार चेतनावाले
मेरे समय के पशवाओ
मत नोडा
खूनखारा से
आखिरी लडाई लडने पर आमादा
हौसला की वलदिया
फेंकने दो उन्हे
ताडपत्ता पर लिखी मुर्दा पोथिया
नोच लेन दो
जनता का राज चलानेवाले
चेहरो पर चढी नकाबें
लटका लेने दो चौराहो पर
पाच दस शीला की राजनीति
और देख लेने दो

वह दश
बिछाइ गई है जहा
जमीन पर बारूद की एक और जमीन
ठडे अस्पतालो मे नही
सुलगत आगन म जन्मता है आदमी
दूध नही
छील दी गई छातिया का
लहू पिलाती है मा अपन बेटे को

इस देश को भी
पढ लेने दो वह भाषा
मसालो से रोशन खदको मे
सिखाय जाते है सबक
तावूत-वद हाकर भी

की जाती है यात्राए
मौत व ठिकान ढहा कर
दिए जाते है जवान हान के सुबूत

सीखने दो मेरे दश को भी
आग की वरखा मे चावल उगाना
घास के निवाला पर
आदमखारा से लडना
जि दगी की लडाई •

धरतो पर एक और धरती

धरती पर एक और धरती
आकाश पर एक और आकाश
राख का रग

नुचा हुआ चेहरा
कितना घिनौना है
और है एक भीड

इन दोना का
और अपन वहुत कुछ को भी छोड
लाघती जाती है
दूसरी धरती
दूसरे आकाश के लिए
भागती है खून के चकता पर
पाव धरती पर भूलती नही

मुर्दा सिपाही की जेब मे बिस्कुट खोजना
बीन लेती है जली रोटिया के टुकडे

धान नहीं धरती की हथेली पर
पानी नहीं आकाश के कटारे मे
जले-बुझे कोयले
नीचे-ऊपर धुआ
सास लेन भर हवा
पहचान से पहले
हाना बनाए रखन
बहुत कुछ तलाशती अपने जसे ही
दूसरे से अजनबी भीड
दूसरे से इतनी दूर
धरती   आकाश   •

आखो का आगन

आखा का आगन
बन गया
झील जा खारे जल की
            पियेगी कसे दृष्टि
दूर   दूर   दूरात

देहरी स ही
ठरता गया
सडक तक दद
            दृष्टि कसे लाघेगी

सन्नाटे न
कुहरा लिया अगर

सार ही घर का
दृष्टि रहेगी कब तक ऊदी

कौन सुनेगा
पत्ता की सारगी बजती
परभाती पत्न पर
हस्ताक्षर कौन करेगा
सूरज के हाथा
कौन पियगा दूध •

सामने पडे

सामन पडे
इस मौन का
आवाज हाना, कहक है
फिर दुख दुखाकर
आधियाना

धूप का अखबार हाकर
शार करना
आकाश से दो हाथ
दूरी पर टगी
खपचिया को खटखटाना
सास का फुटपाथ पर
असवाब होना
बिकने-बेचने के
सार सिलसिलो को
बने रहने पीना पहनना

साचने वाली तहा मे

खाली कुछ नही होता
भीतर और बाहर
अनहोना कुछ भी नही होता

सिलसिलो से बुना हुआ
परिवेश मेरा है
मैं इसका हू ●

पाव-पाव चलने लगी है

पाव-पाव चलने लगी है
शहर की धरती
सरकने लगा है
गूज-गूज कर आकाश
नहा रही है
आदमियो के समुदर मे
फुटपाथ की बाहे खोले सडक
खुश है वह
गहरे-गहरे छप रहे हैं
उसके मुखे कलेजे पर
जीने की माग को
अधिकार की लडाई मे
बदल देने पर आमादा इरादे

कतार और झडे होकर
चलते शहर को देख
उखडने लगी है
कामगारो की मेहनत खा खाकर
बदशक्ल हो गए
लोथडो की सांस

मुदा मसीहा के नाम
मसिया बजाती घटिया सुनने लगी हैं
लडाई जीतन का गीत
जनता का राज
दखन को ललकता
झुर्रियाया लाल मकान
फेंक रहा है खिडकिया से
शकुनिया शिखण्डिया की चिंदिया

पूछ रहा है
सडका पर आ जुडा पौरुष
पीले बगले म बैठे
मत्ता के चौकीदार मे
कहा हैं
चमडी के दमाग पर
लाह का टापा पहिनाकर
फिरकाई जाती पुतलिया
कहा है
आग थूकते खिलौने
कौन बाधेगा अब
पाव पाव चलती धरती
कौन सियेगा बोलता आकाश

सारा शहर
सत्ता वरन्दारो के खिलाफ
आ गया है मैदान म
गणराज्य की बुनियाद रखने
भर ली गई है मुट्ठिया म आग
चेहरे ही नही
भीतरी तहा तक की
सियाही धो दने •

कुहासे की हदों में

कुहासे की हदा म
गरक्ते विस्तार का
एक भी छोर दिखता नही
भूख का ब्रह्माण्ड
ढोता हुआ कब तक चलू

क्षणा का उम्र कहता हुआ
शब्द बुनता रहा हू
मेरा ब्रह्माण्ड मुझसे लहू-मास लेकर टूटा करे
खाइ हुई रोशनी के लिए
खाज बनता रह
मगर आज तक बाले गए सब अथ
खा गई खामाशियो की गिलहरी
हदा से दना ब्रह्माण्ड
मुझमे ही ठरा जा रहा है

राशनी का ललकती आ जीवेषणा
इस जड शिलाखड का बाध
कैसे सहू ।   कब तक सहू

तू जो चाहे
सामन के धुए को दरारू
दूर तक और पाव छापू
किसी कोण पर सूय आकार दू
तू ईंधन बनी इस तरह से सुलग
मैं मरे ब्रह्माण्ड के साथ विस्फूट लू •

अस्तित्व को विस्तारती

अस्तित्व को विस्तारती
ओ धावनी
तुम जहर फेंको
फेंकती जाओ कि
                बाँबियों मे जन्मते
बीमार पीढी के गुणक
मरते चले जाए

शिराओं मे
दौडते रक्ताणुओ
                अब तो
ऊर्जा हो लो
खाया गया है
जितना जैसा शून्य
तलछट सहित बाहर उबाको

ओ, चेतना के स्फुलिंगो
देह के ब्रह्माण्ड को झकझोर दो
रध्र फूटें
फूटते जाएं
उजल जाए निस्सीम •

□□